

## स्वर्ग से प्रदत्त पत्र सिर्फ आप उसे पढ़ सकते हैं



अपने अंतर में होने वाली नकारात्मक चीजों को सकारात्मक चीजों में बदलने का मौका, बीमारी या समस्याओं को ऐसे विचार किया जाए।

उदाहरण के लिए बीमारी ले लो, शरीर के कहाँ पर बीमारी की उत्पत्ति होती है, और बीमारी से कैसे पीड़ित होता है, उनका पता लगाकर नुसखा लिखना डॉक्टर की भूमिका है। इसके साथ ही अपने जीने का तरीका या सोचने के ढंग में असंगतियाँ उभर आई होंगी और तनाव उत्पन्न हुआ होगा, ऐसे सोचकर विचार करना भी मौलिक इलाज के लिए महत्वपूर्ण है।

बीमारी या समस्या स्वर्ग से पत्र है सिर्फ आप उसे पढ़ सकते हैं। और तेन्त्रिक्यो अक्सर इस की मदद करने का पद में है।

आनंदमय जीवन की शिक्षा : तेन्त्रिक्यो

## स्वर्ग से प्रदत्त पत्र सिर्फ आप उसे पढ़ सकते हैं



अपने अंतर में होने वाली नकारात्मक चीजों को सकारात्मक चीजों में बदलने का मौका, बीमारी या समस्याओं को ऐसे विचार किया जाए।

उदाहरण के लिए बीमारी ले लो, शरीर के कहाँ पर बीमारी की उत्पत्ति होती है, और बीमारी से कैसे पीड़ित होता है, उनका पता लगाकर नुसखा लिखना डॉक्टर की भूमिका है। इसके साथ ही अपने जीने का तरीका या सोचने के ढंग में असंगतियाँ उभर आई होंगी और तनाव उत्पन्न हुआ होगा, ऐसे सोचकर विचार करना भी मौलिक इलाज के लिए महत्वपूर्ण है।

बीमारी या समस्या स्वर्ग से पत्र है सिर्फ आप उसे पढ़ सकते हैं। और तेन्त्रिक्यो अक्सर इस की मदद करने का पद में है।

आनंदमय जीवन की शिक्षा : तेन्त्रिक्यो

चाहे आप के पास कोई कितना भी चीजें  
क्यों न हो,  
यदि मन में चिंता-फ़िकर है  
तो कोई सुख नहीं।

(परमेश्वर का वचन "ओसाशिजु" = 15 जुलाई 1901)



अर्थात् आपके पास कितनी भी चीजें या धन हैं, आपको चिंता-फ़िकर है तो, आप का जीवन में आनंद नहीं आता है। विशेष कर पारस्परिक संबंधों में आपको अच्छी बात है तो, खुशी से हुमकेगा। लेकिन कष्टप्रद बात है तो, अनिच्छुक होकर टालने की प्रवृत्ति होती है। उपयुक्त समय पर काररवाई करना भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सब को छोड़कर चिंतित वाली बातों को पहले समेटने का मन बनाने का पोषण करना चाहिए। ऐसे भी सिखाया गया है कि यदि आपको चिंता-फ़िकर है, तो आनंदमय नहीं होती है।

<https://www.tenrikyo.or.jp>

चाहे आप के पास कोई कितना भी चीजें  
क्यों न हो,  
यदि मन में चिंता-फ़िकर है  
तो कोई सुख नहीं।

(परमेश्वर का वचन "ओसाशिजु" = 15 जुलाई 1901)



अर्थात् आपके पास कितनी भी चीजें या धन हैं, आपको चिंता-फ़िकर है तो, आप का जीवन में आनंद नहीं आता है। विशेष कर पारस्परिक संबंधों में आपको अच्छी बात है तो, खुशी से हुमकेगा। लेकिन कष्टप्रद बात है तो, अनिच्छुक होकर टालने की प्रवृत्ति होती है। उपयुक्त समय पर काररवाई करना भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सब को छोड़कर चिंतित वाली बातों को पहले समेटने का मन बनाने का पोषण करना चाहिए। ऐसे भी सिखाया गया है कि यदि आपको चिंता-फ़िकर है, तो आनंदमय नहीं होती है।

<https://www.tenrikyo.or.jp>

औरों को कर देने के मन से  
दुनिया भरना चाहता है।



वह चाहिए, यह भी चाहिए, ऐसा करो, वैसा करो, ऐसा मन बच्चों का जैसा है। इसके विपरीत, औरों को ऐसा कर देना चाहता है, इस तरह कर देगा तो आनंद आएगा। ऐसा आचरण माता पिता का मन में आधारित है।

अगर आपको दूसरों से कुछ कर लेने की उम्मीद है, तो कभी मन में असंतोष आएगा। हर कोई आसपास के लोगों को वैसे करो, जैसे अपने बच्चे या तुमसे प्यार करने के लिए करता है। बिना शर्त पर एक दूसरों को सहयोग करेगा, यह दुनिया और आराम में आएगा। बहुत से "कर देने का मन" इकट्ठा करके माता पिता का मन में भरा समुदाय बनाना अच्छी बात है। हम इसकी सिफारिश करते हैं।

आनंदमय जीवन की शिक्षा : तेन्द्रिक्यो

औरों को कर देने के मन से  
दुनिया भरना चाहता है।



वह चाहिए, यह भी चाहिए, ऐसा करो, वैसा करो, ऐसा मन बच्चों का जैसा है। इसके विपरीत, औरों को ऐसा कर देना चाहता है, इस तरह कर देगा तो आनंद आएगा। ऐसा आचरण माता पिता का मन में आधारित है।

अगर आपको दूसरों से कुछ कर लेने की उम्मीद है, तो कभी मन में असंतोष आएगा। हर कोई आसपास के लोगों को वैसे करो, जैसे अपने बच्चे या तुमसे प्यार करने के लिए करता है। बिना शर्त पर एक दूसरों को सहयोग करेगा, यह दुनिया और आराम में आएगा। बहुत से "कर देने का मन" इकट्ठा करके माता पिता का मन में भरा समुदाय बनाना अच्छी बात है। हम इसकी सिफारिश करते हैं।

आनंदमय जीवन की शिक्षा : तेन्द्रिक्यो

हल्का सामान कहीं का भी  
ले जा सकता है।  
भारी सामान दूर तक नहीं ले सकता।

(परमेश्वर का वचन "ओसाशिजु" = 29 दिसंबर 1897)



ऐसा भी सिखाया गया है कि "हल्का सामान हर दिन ले जा सकता है"। साल की शुरुआत में या सुविधाजनक समय पर हम उसका फैसला करते हैं जो डायरी लिखें या दस हजार कदम चलें। ऐसे जोर लगाने भी उसका दबाव

महसूस करने लगा तो यह नहीं चलेगा।

अपना सामान को हल्का बनाकर हर दिन चलें। इस के लिए हमें ताकत लगेगा। अंततः जो चीज़ पहले भारी सामान महसूस होता है उसे हल्का सोचकर आसानी से उठा सकेगा। यह अच्छी बात है। जारी रखना सच है। लंबे समय तक जारी रखना ही अनमोल है।

हल्का सामान कहीं का भी  
ले जा सकता है।  
भारी सामान दूर तक नहीं ले सकता।

(परमेश्वर का वचन "ओसाशिजु" = 29 दिसंबर 1897)



ऐसा भी सिखाया गया है कि "हल्का सामान हर दिन ले जा सकता है"। साल की शुरुआत में या सुविधाजनक समय पर हम उसका फैसला करते हैं जो डायरी लिखें या दस हजार कदम चलें। ऐसे जोर लगाने भी उसका दबाव

महसूस करने लगा तो यह नहीं चलेगा।

अपना सामान को हल्का बनाकर हर दिन चलें। इस के लिए हमें ताकत लगेगा। अंततः जो चीज़ पहले भारी सामान महसूस होता है उसे हल्का सोचकर आसानी से उठा सकेगा। यह अच्छी बात है। जारी रखना सच है। लंबे समय तक जारी रखना ही अनमोल है।

## पारस्परिक सहायोग सहज रूप से निरंतर



भूकंप की आपदा आया। ठंड से नुकसान लगातार पहुँच रहा। सहानुभूति मन से लोगों का दिल चलके कार्रवाई करने लगता है। यह दृश्य देखने में हृदय के तार बज उठाकर और ज्यादा लोग कार्रवाई का विस्तार हो जाएगा।

हम दैनिक जीवन में अपने आप से नहीं जी सकते हैं। चाहे होश या बेहोश हो, जीते जाना अंततः कोई बड़े वाले द्वारा हमें ज़िदा कर दिया गया है। इसके साथ ही किसी के द्वारा देखभाल भी किया जाता है। इसलिए दूसरों की मदद करना ही हमारी ज़िदगी कह सकता है। एक दूसरे को मदद करना चाहिए। मामूली रूप से स्वाभाविक रूप से और निरंतर करो।

आनंदमय जीवन की शिक्षा : तेन्टिक्यो

## पारस्परिक सहायोग सहज रूप से निरंतर



भूकंप की आपदा आया। ठंड से नुकसान लगातार पहुँच रहा। सहानुभूति मन से लोगों का दिल चलके कार्रवाई करने लगता है। यह दृश्य देखने में हृदय के तार बज उठाकर और ज्यादा लोग कार्रवाई का विस्तार हो जाएगा।

हम दैनिक जीवन में अपने आप से नहीं जी सकते हैं। चाहे होश या बेहोश हो, जीते जाना अंततः कोई बड़े वाले द्वारा हमें ज़िदा कर दिया गया है। इसके साथ ही किसी के द्वारा देखभाल भी किया जाता है। इसलिए दूसरों की मदद करना ही हमारी ज़िदगी कह सकता है। एक दूसरे को मदद करना चाहिए। मामूली रूप से स्वाभाविक रूप से और निरंतर करो।

आनंदमय जीवन की शिक्षा : तेन्टिक्यो

तितली और फूल जैसे कहकर अपने बच्चों  
को पालन-पोषण करते हुए  
तितली और फूल कहते हो,  
एक श्वास ही तितली और फूल है।

(परमेश्वर का वचन "ओसाशिजु" = 18 मार्च 1894)

तितली और फूल जैसे कहकर अपने बच्चों  
को पालन-पोषण करते हुए  
तितली और फूल कहते हो,  
एक श्वास ही तितली और फूल है।

(परमेश्वर का वचन "ओसाशिजु" = 18 मार्च 1894)

"तितली और फूल"  
अर्थात अपने बच्चों को  
तितली और फूल की  
तरह आनंदी और प्यारे  
से संजोने वाले को  
वर्णन करने के लिए  
उपयोग किया जाने का शब्द है। परमेश्वर का वचन और  
जारी होता है कि तितली और फूल जीवित संदरता के लिए  
प्रसंशा किया जाता है। यदि वे कुमहला चूके हैं तो कोई  
फायदा नहीं है। अपने बच्चों को अच्छा खाना खिलाना और  
सुंदर पोशाक पहनाना भी अच्छा है, लेकिन "हम जीवित रखा  
गया है" इसे भूलना नहीं चाहिए।



"तितली और फूल"  
अर्थात अपने बच्चों को  
तितली और फूल की  
तरह आनंदी और प्यारे  
से संजोने वाले को  
वर्णन करने के लिए  
उपयोग किया जाने का शब्द है। परमेश्वर का वचन और  
जारी होता है कि तितली और फूल जीवित संदरता के लिए  
प्रसंशा किया जाता है। यदि वे कुमहला चूके हैं तो कोई  
फायदा नहीं है। अपने बच्चों को अच्छा खाना खिलाना और  
सुंदर पोशाक पहनाना भी अच्छा है, लेकिन "हम जीवित रखा  
गया है" इसे भूलना नहीं चाहिए।

